International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)
E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

गोदान : एक ग्रामीण परिवेश

सुरज्ञान चौधरी

नेट, जे.आर.एफ.
एम.ए. (हिन्दी साहित्य)

शोध – संक्षेप :

गोदान 1936 ई. में प्रकाशित मुंशी प्रेमचन्द का ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यास है। भारत के ग्रामीण परिवेश को जानने में साहित्य बहुत बड़ी मदद करता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। इसी साहित्य में उपन्यास एक ऐसी विद्या है जिसमें समग्र जीवन का उल्लेख मिलता है।

मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित गोदान में ग्रामीण समाज के शोषण, अभाव और संघर्ष का चित्रण मिलता है। ग्रामीण शेषण का जैसा चित्रण इस उपन्यास में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। प्रेमचन्द का यह उपन्यास आज के समय में उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके अपने दौर में। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण जीवन के पक्ष में गोदान का विवेचन किया गया है।

प्रस्तावना :

गोदान प्रेमचन्द के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसमें उपन्यास कला पूरे वैभव व सौन्दर्य के साथ प्रगट हुई है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेचचन्द ने भारतीय ग्रामीण जीवन की आत्मा को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है – ''हमारे उपन्यासकारों को देश के वर्तमान जीवन के भीतर अपनी दृष्टि गडा कर देखना चाहिए। केवल राजनीतिक दलों की बातों को लेकर ही न चलना चाहिए। साहित्य को राजनीति के ऊपर रहना चाहिए, सदा उसके इशारों पर ही न नाचना चाहिए।''[1]

इसी संबंध में गोदान एक पुनर्विचार में कथन है – ''गोदान उपन्यास का नाम गोदान है जिसमें यह सूचना मिलती है कि यह सम्पूर्ण भारतीय जीवन को चित्रित करने का लक्ष्य रखता है।''[2]

गोदान की ग्रामकथा में तत्कालीन ग्रामीण जीवन का कोई भी पक्ष नहीं छूटा है। मुंशी प्रेमचन्द को ग्रामीण जीवन का चितेरा भी कहा जाता है। ग्रामीण जीवन की वास्तविक स्थितियों, परिस्थितियों का यर्थाथवादी पक्ष इन्होंने इस उपन्यास में रखा है। प्रेमचन्द ऐसे भारतीय उपन्यासकार है जिन्होंने उपन्यासों का उपयोग समाज व जीवन के आलोचना के लिए किया है। उन्होंने उपन्यास में उन समस्याओं को उजागर किया है जो वर्तमान युग से जुड़ी है जिन्हें हर व्यक्ति अनुभव करता है। गोदान का प्रमुख पात्र होरी की आरम्भ में अपने घर गाय रखने की तीव्र इच्छा, उसका गाय लेकर आना, अंत में गाय रखने में असमर्थता तथा अंत में वह मरता है तब परिवार के पास न गाय होती है न गोदान करने के लिए रूपए। इस तरह उपन्यास में हर समस्या को उजागर किया गया है।

प्रेमचन्द एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते है जहाँ भेदभाव के अभिशाप से मानवता पीड़ित न हो, किसी प्रकार का शोषण न हो, आदमी की पहचान सम्पत्ति व जाति से न हो। प्रेमचन्द ने ढोंग, पाखण्ड, बाह्यांडबर, प्रदर्शन, कर्मकाण्ड आदि का विरोध किया है, मार्च 1934 के 'हंस' में उन्होंने लिखा – ''ईश्वर की उपासना का केवल एक मार्ग है और वह है मन, वचन और कर्म की शुद्धता अगर ईश्वर इस शुद्धता की प्राप्ति में सहायक है, तो शौक से उसका ध्यान कीजिए, लेकिन उसके नाम पर हर धर्म में जो स्वागत हो रहा है, उसकी जड़ खोदना किसी तरह ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है।''

प्रेमचन्द ने ग्रामीण जीवन की वास्तविक छवि इस उपन्यास में समाहित की है, इस सम्बन्ध में गणपति चन्द्र गुप्त ने कहा है – ''प्रेमचन्द आदर्शोन्मुखी, यर्थाथवादी, रचनाकार है जिन्होंने राष्ट्र की प्रायः सभी समस्याओं का चित्रण पूरी सच्चाई के साथ किया है।''[3]

प्रेमचन्द ने गोदान में समग्र भारतीय समाज का चित्र उतारा है जिसका प्रमुख भाग गाँव में बिखरा पड़ा है। उन्होंने इसमें गाँवों के किसानों के होने वाले शोषण का चित्रण किया है जिसमें प्रत्यक्ष रूप से तो जमींदार करते है, अप्रत्यक्ष रूप से नगर वाले।

गोदान में किसी जनमानस के बीच समय की गति के अनुसार जो गूढ़ व चिंताजनक परिस्थितियाँ खड़ी होती है उनको सामने लाया गया है। ग्रामीण पात्रों में होरी, धनिया, झुनिया, भोला, गोबर, सोना, रूपा, सिलिया तथा पुनिया निम्न आर्थिक स्थिति के पात्र है। झिंगुरी सिंह, पं. दातादीन तथा गोबर (जिसका नाम गोवर्धन शहर से पैसा कमाकर लाने पर बदल दिया जाता है।) ये उच्च आर्थिक स्थिति वाले पात्र सम्मान का परिचय देते है।

भयंकर आर्थिक स्थिति में होरी अपने आप में किसान कहलाने में गर्व का अनुभव करता है। उनका मानना है – ''सम्पत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है। छोटे बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं।''[4]

गोदान में ग्रामीण जीवन में छुआछूत की समस्या :

धनुष यज्ञ के अवसर पर भोजनालय में छुआछूत का कोई भेद नहीं है ''सभी जातियों और वर्गों के लोग साथ भोजन करने बैठे, प्रेमचन्द समाज में सुधार ही नहीं बदलाव भी चाहते थे। धनुष यज्ञ के आयोजन में व्यवस्था को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि धनुष यज्ञ केवल गाँवों की सीधी–सादी जनता के लिए है।

गोदान में जाति व्यवस्था किस प्रकार ग्रामीण समाज में बंटी होती है। उस पर भी अपना मत इन्होंने रखा है। गोदान में ब्राह्मण और शुद्र कन्या के बीच प्रेम प्रसंग और उससे उपजे जातिगत विद्रोह का भी उल्लेख किया है। सिलिया के समाज के पक्षधर लोगों का कहना है कि – ''तुम हमें ब्राह्मण नहीं बना सकते तो हम तुम्हें चमार बना सकते हैं। हमें ब्राह्मण बना दो हमारी सारी बिरादरी बनने को तैयार है। जब यह समर्थ नही तो तुम चमार बनो।''[5] जाति व्यवस्था पर हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है – ''जो ग्रंथकार किसी जाति को सच्चे रूप में उपस्थित करता है, उसके गुण–दोषों का ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त कर सकता है – वह संसार की सबसे बड़ी सेवा करता है। चाहे रायसाहब पटवारी, पटेश्वरी लाल हो या झिंगुरी सिंह हो, प्रेमचन्द जातिय गुणों – अवगुणों को समान रूप से चित्रित करते है।''

होरी, हीरा, भोला, धनिया, मेहता, मालती आदि पात्रों के चरित्रों को भी वे जातिय सन्दर्भों में व्यक्त करने से नहीं चूकते।

प्रेमचन्द ने ग्रामीण जीवन की वास्तविक छवि इस उपन्यास में समाहित की है, इस सम्बन्ध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – ''अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार, भाषा, भाव, रहन–सहन, आशा–आकांक्षा, सुख–दुःख को जानना चाहते है तो प्रेमचन्द के उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।''

प्रेमचन्द गोदान में सर्वत्र ग्रामीण जीवन के धार्मिक पाखण्डों और अंधविश्वासों पर चोट करते हैं। उनकी दृष्टि में धर्म का सही रूप त्याग व धर्म है। गोदान में दातादीन ब्राह्मण है और जजमानी उसकी जीविका का साधन। जजमानी के माध्यम से ही वह ग्रामीणों को अपने इच्छानुसार लूटता रहता है।

ग्रामीण लोगों को अन्य लोगों से अलग उनकी वेश–भूषा भी करती है। प्रेमचन्द ने ग्रामीण पात्रों को लाठी, जूते, पगड़ी का प्रयोग करते दिखाया है। गोदान में ग्रामीण जीवन के त्यौहारों – दशहरे, होली का भी चित्रण किया गया है।

गोदान में ग्रामीण जीवन में पीढ़ीगत उत्पन्न होने वाले वैचारिक मतभेद का गोबर व होरी के माध्यम से उजागर किया है। होरी पुरातन पीढ़ी तो गोबर नवीन पीढ़ी का प्रतीक है। राम साहब को लेकर दोनों के विचारों में मतभेद है – होरी – छोटे बड़े के भेद को भगवान की देन समझता है वहीं गोबर के लिए जिसके हाथ में लाठी है वही गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।

होरी – ''हम लोग समझते हैं बड़े आदमी सुखी होंगे लेकिन सच पूछो तो वह हमसे भी ज्यादा दुःखी है हमें पेट की ही चिन्ता है, उन्हें हजारों चिन्ताऐं घेरे रहती है।'' ––

गोबर व्यग्य से कहता है – ''तो फिर अपना इलाका हमें क्यों नहीं दे देते! हम अपने खेत, बेल, हल, कुदाल, सब उन्हें देने को तैयार हैं, करेंगे बदला? यह सब धूर्तता है, निरी मोटमरदी जिसे दुःख होता है वह दर्जनों मोटरे नहीं रखता, महलों में नहीं रहता, हलवा–पूरी नहीं खाता, न नाच रंग में लिप्त रहता है, मजे से राज का सुख भोग रहे हैं, उस पर दुःखी है।''[6]

गोदान में ग्रामीणों के बीच उच्च वर्ग द्वारा आपसी फूट डालों, राज करों की नीति को भी स्पष्ट किया है। होरी के माध्यम से अमरपाल सिंह गाँव वालों के बीच फूट डालने का कार्य करता है।

इस संबंध में रामविलास शर्मा ने कहा है – ''राय साहब चरित्र के पारखी है तथा होरी की कमजोर नस पहचानते हैं, वह गाँव के किसानों में फूट डालने में सफल हुए हैं, होरी के रक्षक का नकली पार्ट करके वह गाँव के आदमियों को बेदखली, कुडकी वगैरह जीवन के सभी सुखो का अनुभव करा देते हैं।''[7]

प्रेमचन्द ने ग्रामीण समाज में भातृत्व प्रेम, होरी तथा भोला के प्रसंग के माध्यम से व्यक्त किया है। होरी की गाय को जहर भोला ने दिया था यह बात होरी जानता था। फिर भी वह भाई जो बचाने के लिए कहता है – ''मेरा सुबहा किसी पर नहीं है। सरकार गाय अपनी मोत से मरी है। बूढ़ी हो गई थी।''

गोदान में ग्रामीण जीवन में बिरादरी का भी वर्णन हुआ है जिसके इशारों पर ग्रामीणों को नाचना पड़ता है। गोबर व झुनिया के विवाह के प्रसंग में होरी के जीवन में दुःख भरने का कार्य बिरादरी आर्थिक दण्ड लगाकर करती है।

गोदान भारतीय समाज में ग्रामीण व्यवस्था के शहरी विस्थापन की तस्वीर भी प्रस्तुत करता है, जिसके सम्बन्ध में नलिन विलोचन शर्मा कहते हैं कि ''गोदान ग्रामीण और शहरी समाज के बीच संघर्ष को दिखाया है।'' इसमें जीवन की रक्षा के लिए जीवन मूल्य किस प्रकार बदले जाते है इस पर भी दृष्टि डाली गयी है।''

गोदान में प्रेमचन्द बताना चाहते हैं कि महाजनी युग में ग्रामीण किसानों के लिए अपने अस्तित्व को बचाये रखना बहुत मुश्किल हो गया था। उपन्यास का नायक होरी जीवन भर अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए संघर्ष करता रहता है। जीवन संघर्ष करते हुए बार–बार हारने पर भी वह हिम्मत नहीं हारता बल्कि भाग्य से लड़ता रहता है।

प्रेमचन्द का ग्रामीण सिर्फ गाँव तक ही सीमित नहीं है वह एक आम ग्रामीण की कथा को कहता है जो शहर पलायन करता है तथा शहरी जीवन के त्रास को झेलकर वापस गाँव आ जाता है।

होरी के जीवन की आर्थिक परिस्थितियों, ऋण का बोझ तथा सामाजिक दबाव, इन सभी पहलुओं का वर्णन एक आम मध्यम वर्ग व्यक्ति के जीवन की ही दास्ता को व्यक्त करता है। ऋण के बोझ तले दबे होरी की आर्थिक स्थिति बड़ी ही दयनीय थी। होरी को लेकर इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है – ''होरी ऋण के बोझ से बुरी तरह दबा हुआ है। जीविका चलाने के लिए वह तीन साहुकारों से रूपया उधार लेने पर विवश हो जाता है। ऋण चुकाने और मितव्ययिता से दिन काटने के लिए वह अपनी शक्ति से भी अधिक मेहनत करता है। बहुत दिनों तक अध भूखा

रहने के बाद एक दिन वह सड़क पर गिर पड़ता है और उसकी जीवन–लीला समाप्त हो जाती है।'' बावजूद क्रूरता तब होती है जब रूपया माँगने वाले उसके पास आ धमक पड़ते है और उसकी पत्नी धनिया रोती – बिलखती हुई घर में रखे बीस आने ब्राह्मण के पवित्र हाथों पर रखती हुई कहती है – ''महाराज घर में न गाय है न बछिया, न पैसा। यही पैसे है, यही इनका गोदान है।''[8]

गोदान में नये समाज की रचना के संकेत दिए है इसमें प्रेमचन्द ने गाँधीवादी विचारधारा व मार्क्सवादी विचारधारा का मेल किया है।

निष्कर्ष :

गोदान में भारतीय ग्रामीण जीवन का विस्तृत और वास्तविक चित्रण किया गया है। उपन्यास में होरी और धनिया जैसे ग्रामीण पात्रों के माध्यम से प्रेमचन्द ने भारतीय किसानों की कठिनाईयों, संघर्ष, गरीबी और सामाजिक अन्याय को दर्शाया है। ये पात्र गरीबी और शोषण के चक्र में फंसे हुए है। उनका जीवन यर्थाथवादी परिस्थितियों को व्यक्त करता है जो उस समय के भारतीय गाँवों में आम थी।

संदर्भ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ.सं. 386.
2. गोदान एक पुनर्विचार, सम्पादक परमानन्द श्रीवास्तव, पृ.सं. 41.
3. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, पृ.सं. 452.
4. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 20.
5. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 20.
6. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, पृ.सं. 20.
7. प्रेमचन्द और उनका युग, 1975, रामविलास शर्मा, पृ.सं. 100.
8. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द, परिकल्पना प्रकाशन, पृ.सं. 400.